करकण्डु की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखें।

करकण्डु की कथा बड़ी ही मार्मिक है। प्राचीन युग में चम्पा नगरी नाम का एक नगर था। वहाँ दधिवाहन नाम का एक राजा निवास करता था। पद्मावती उसकी रानी थी, दोनों के संभोग से रानी को दोहद की उत्पत्ति हुई राजा जय नाम का हाथी पर पद्मावती को वन विहार के लिए चढ़ाया राजा स्वयं छत्र धारण कर रानी को साथ बैठाया। वसंत ऋतु का आगमन हो गया था। वसंत ऋतु से सुगंधित हाथी मदोन्मत हो गया और सुपथ से कुपथ की ओर दौड़ने लगा तब से व्याकुल होकर राजा ने पद्मावती से कहा कि जैसे ही यह हाथी वट-वृक्ष की शाखा के नजदीक से गुजरेगा तो हमें वृक्ष की डाली को पकड़ लेना चाहिए। राजा डाल को पकड़ लिया परन्तु अबला पद्मावती शाखा नहीं पकड़ सकी। हाथी भागते-भागते राजा की आँखों से ओझल हो गया। राजा उदास चित होकर अपने नगर को लौट गया इधर हाथी पद्मावती के साथ एक भयानक जंगल में सरोवर में उतरने लगा तभी वह पद्मावती भी उस हाथी के ऊपर से धीरे-धीरे उतर गई। अति श्रमित होकर इधर-उधर देखने लगी और विचार करने लगी कि मैं ऐसे घोर संकट में आ पड़ूँची जिसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता है अब मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ। धैर्य धारण कर नमस्कार रूपी मंत्र का उच्चारण कर आगे बढ़ी थोड़ी दूर जाने पर एक तपस्वी को देखी उसका अभिवादन किया संयोग से वह तपस्वी रानी के पिता का पुराना मित्र था। अतः वह रानी पद्मावती दन्तीपुर नगर के समीप छोड़ देता है वहाँ एक साध्वी के पास पहुँची और उससे उसने व्रत ग्रहण कर लिया।

समयानुसार पद्मावती को पुत्र उत्पन्न हुआ जिसे वह श्मशान भूमि में रख आई। वहाँ श्मशान पालक ने उस लड़का को घर लाता है और उसका नाम अवकीर्णक रख देता है। पद्मावती श्मशान पालक से मित्रता कर लेती है तथा अपने भिक्षाटन में लाये वस्तुओं को उसे जाकर दे आती है लड़का बड़ा होकर राजा का वेष धारण करते हुए सभी लड़कों के साथ खेलता है लड़कों ने उसका नाम करकण्डु रख दिया। बड़ा होने पर करकण्डु स्वयं ही श्मशान भूमि का रक्षा करने लगता है।

एक समय दो साधी वहाँ आये एक ने वहाँ उगे हुए बाँस के एक दण्ड को देखकर कहा यदि यह चार अंगुल बड़ा हो जाय और इसे जो प्राप्त करेगा वह राजा होने का भोग्य बताया। इस बात को एक ब्राह्मण

पत्र सुनकर चार अंगुल नीचे से डण्डे को खोदकर निकाल लिया किन्तु करकन्डु ने उसे ऊपर कर छीन लिया और ब्राह्मण को कहा कि यदि मैं राजा बन जाउँगा तो तुम्हें एक गाँव दान में दे दूँगा। लेकिन ब्राह्मण अपने साथियों के साथ करकन्डु को जान से मारने की योजना बनाते है, करकन्डु के माता-पिता इस बात को जानकर उस गाँव को छोड़कर तीनों कंचनपुर आ जाते है संयोग से वहाँ के राजा मृत्यु को प्राप्त हो चुका था। राजा बनने हेतु एक घोड़ा अभिमंत्रित कर छोड़ा गया था। वह सोते हुए करकन्डु के पास प्रदक्षिणा देकर उसके पास ही खड़ा हो गया। तब लोगों ने उस अवकीर्णक अथवा करकन्डु को राजा बनाकर नगर में प्रवेश कराया और उसका राज्याभिषेक कर दिया।

करकन्डु को राजा बनते ही वह ब्राह्मण वहाँ आ पहुंचा तथा करकन्डु से चम्पा नगरी के एक गाँव को मांगा, करकन्डु ने इसके लिए राजा दधिवाहन के पास पत्र लिखा पत्र पढ़कर दधिवाहन क्रोधित हो उठा, दोनों में घमासान युद्ध होने की तैयारी होने लगा। इस बात की जानकारी जब पद्मावती को होता है तब वह चम्पा नगरी अपने पति के पास जाती है और अपना तथा करकन्डु की सारी वृतान्त कह सुनाती है। राजा दधिवाहन संतुष्ट होकर दोनों ही राज्य करकन्डु को देकर रानी सहित दीक्षा ग्रहण कर लेता है

दोनों राज्यों को मिलने से करकन्डु एक महान शासक बन जाता है उसे अपना गोकुल बहुत प्रिय था। उस गोकुल में अत्यन्त बलिष्ठ श्वेत वर्ण वाला गाय का एक सुन्दर बछड़ा था। राजा उसे देखकर बहुत ही खुश था। समय पाकर बछड़ा सुन्दर वृषभ (साँड) हो गया। कुछ समय के बाद साँड जब बूढ़ा हो गया तब राजा देखकर बहुत उदास हो गया तथा उत्सर्ग से अपकर्ष की गति को जानकर वैराग्य ग्रहण कर लिया और महामुनि के रूप में साधना कर सद्गति को प्राप्त करता है

अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि कवि देवेन्द्रगणि ने कथा के माध्यम से प्राचीन समय के ऐतिहासिक बातों का वर्णन तथा समय के गति पर सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला है।